Impact Factor-8.632 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

March-23

(CCCXCVIIII) 399

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. Shaikh Md. Babar
Principal
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

Editor
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

B.Aadhar

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com 285 Aadhar PUBLICATIONS

We the Research Organization will do provide help for the following works listed below.

Support for Arts, Commerce & Science all Disciplines

- **Research Paper Publication**
- **Book Chapters for Publications**
- **ISBN Publications Supports**
- **M.Phil Dissertations Publish**
- **Ph.D. Thesis in Book Format**
- **ISSN Journals with Impact Factor 8.632**
- **Online Book Publication**
- **Seminar Special Issues**
- **Conference Proceedings**

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Mobile : 9595560278 /

Aadhar Publications

For Details www.aadharsocial.com

New Hanuman Nagar, In Front Of Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604 , Mob-- 9595560278, Emial: aadharpublication@gmail.com

Price:Rs.500/

issn 2278- 9308

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CCCXCVIIII) 399-A
ISSN : 2278-9308
March , 2023

INDEX-A

No.	Title of the Paper / Authors' Name	Page No.
1	स्वाधीनता आन्दोलन में लोकप्रिय प्रतिनिधि कहानियों की भूमिका- डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव	1
2	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी काव्य का योगदान प्रो. डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड	5
3	द्विवेदी युगीन काव्य में राष्ट्रीय चेतना डॉ.शिवसर्जन होनाजी टाले	8
4	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता प्रा डॉ विश्वनाथ किशन भालेराव	11
5	स्वाधीनता आंदोलन और बालकृष्ण शर्मा "नवीन" का काव्य प्रा. डॉ. शहाजी बाला चव्हाण	14
6	स्वाधीनता आंदोलन में लोकसाहित्य का योगदान डॉ. शेख शहनाज अहेमद	18
7	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य प्रा संतोष विजय येरावार	23
8	हिंदी की पत्रकारिता में पं. माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान प्रा. डॉ. मोहन मुंजाभाऊ डमरे	29
9	भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और छत्रपति शिवाजी (आधुनिक हिंदी काव्य के संदर्भ में) प्रा. डॉ. नरसिंगदास ओमप्रकाशजी बंग	33
10	स्वाधीनता आंदोलन और मैथिलीशरण गुप्त का काव्य प्रा.येळणे देविदास गणेशराव	37
11	स्वाधीनता का यज्ञ भारतेंदु युगीन काव्य डॉ. विजय शिवराम पवार	40
12	जयशंकर प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नाटक में राष्ट्रीय चेतना डॉ. कल्याण शिवाजीराव पाटील	45
13	स्वाधीनता आंदोलन और सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य डॉ. देविदास भिमराव जाधव	50
14	स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी साहित्यकारों का योगदान डॉ. सुरेश कुमार	54
15	स्वाधिनता आंदोलन और हिंदी साहित्य डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला	59
16	स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं का योगदान डॉ. संगीता पांडुरंग लोमटे	63
17	हिंदी साहित्य और हिंदी सिनेमा डॉ.संगीता श. उप्पे	66
18	स्वाधिनता आंदोलन में हिंदी कवियों का योगदान प्रा. डॉ. बालिका रामराव कांबले	69
19	विभिन्न हिन्दी उपन्यास और भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन शेख अब्दुल बारी अब्दुल करीम , डॉ. दस्तगीर एस.देशमुख	72

287

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO (CCCXCVIIII) 399-A
ISSN : 2278-9308
March , 2023

स्वाधीनता आंदोलन में लोकसाहित्य का योगदान

डॉ. शेख शहनाज अहेमद
हिंदी विभागाध्यक्ष हुतात्मा जयवंतराव महाविद्यालय, हिमायतनगर, जि.नांदेड (महाराष्ट्र)
मो. 9404639785

लोकसाहित्य का अध्ययन सामाजिक-सांस्कृतिक पक्षों के साथ ही स्वाधीनता के इतिहास को जानने-समझने की दृष्टि से भी आवश्यक है। स्वाधीनता आंदोलन में लोक की भूमिका ही सबसे बड़ी थी। लोक ने स्वाधीनता आंदोलन की रूपरेखा तैयार करने वाले नेतृत्व को स्वीकार किया और उसके बताए रास्ते पर चल पड़ा। लोक के ही बस पर स्वाधीनता आंदोलन में उपनिवेशवादी शासन को उखाड़ फेंकने की वास्तविक शक्ति का उदय हुआ। लोक साहित्य में स्वाधीनता आंदोलन से लेकर स्वाधीनता प्राप्ति के उषा काल तक का लेखा जोखा मौजूद है।

हिंदी क्षेत्र में स्वाधीनता आंदोलन की आग ने लोडसाहित्य में एक ऐसी तपिश भरने में सफलता पाई, जिसके प्रभाववश उस काल में अंग्रेजी के अत्याचारी के समय सीना तानकर खड़े होने का साहस गाँव-गाँव के हर उम्र के नर-नारी के मन में उत्पन्न हो सका और वे प्राणपण से स्वातंत्र्य समर में जुझ सके। महात्मा गांधी के भारत की राजनीति में प्रवेश से पहले सभी जनपदीय अंचलों में 1857 की क्रांति की गाथाएँ प्रचलित थी। सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रसिद्ध रचना 'झाँसी की रानी' से यह ज्ञात होता है कि कवियित्री की पीढ़ी तक वह शौर्य-गाथा 'हरबोलो' अर्थात बुंदेलखंड के लोक- गायकों के से पहुँची थी 'बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी माध्यम कहानी थी।' झाँसी की रानी की भाँति ही वीर कुंवर सिंह भी उस काल के ऐसे विप्लवी बीर हुए जिनकी गाथा पीढ़ियों तक लोक मानस को उद्वेलित और उत्प्रेरित करती रही तथा आज भी गाई जाती है। अपनी पुस्तक 'लोकमानस' में डॉ. विद्या बिंदु सिंह ने प्रतिपादित किया है कि "सबसे अधिक दमन और अत्याचार के विरुद्ध तीव्र आक्रोश जनपदीय साहित्य में ही मुखरित हुआ है क्योंकि वह साहित्य छापाखाने के संसार से बराबर ऊपर रहा है और वह प्रत्येक निरंकुश शासन का सबसे बड़ा शक्तिशाली उत्तर रहा। अंग्रेजो के खिलाफ़, अंग्रेजी शासन के खिलाफ आवाज उठाने में सभी क्षेत्रों के लोकगायक आगे आए।"(1) इसके परिणामस्वरूप स्वतंत्रता आंदोलन के रणबांकुरों की वीरगाथाएँ लोककंठ से परिचित-प्रसारित होकर व्यापक जन-गण का कंठहार बनी। इन गाथायों में अत्यधिक प्रचलित बाबू कंवरसिंह और उनके बंधु के पराक्रम से संबंधित एक गीत में कहा गया है कि बाबू कुवर सिंह के राज्य के बिना अब केसरिया रंगाने का मन नहीं होता -

बाबू कुंवर सिंह तोहरे राजा बिनु, अब न रंगवो केसरिया।
यहर से अइले टेलि फिरंगी, वह कुंवर दोऊ भैया।
गोला-बारूद के चले पिचकारी, बिचवा मा होत लडैया।
अमर सिंह के कम्मर टूटल, सीधा सिंह के बाँटी।
पूछि आवा फिरंगिन से, अब लडिहैं कि नाहीं। "(2)

एक अन्य गीत में बाबू अमर सिंह के पत्र का उल्लेख मिलता है जिसमें इतिहास की इस घटना पर टिप्पणी शामिल हैं कि सिपाहियों को कारतूस में लगी चमड़े की कैंप को दाँतों से खींचकर तोड़ना पड़ता था-

"लिख-लिख पतिया भेजलेन कुंवर सिंह
सुन ल्या अमर सिंह भाई हो राम।
चमवाके टोटवां दाँत से चलावेला।
छत्री के धरम नसावे हो राम।" (3)

बाबू कुंवर सिंह को आशा थी कि दूसरे आंचलिक राजागण अँग्रेजी के विरुद्ध संघर्ष में उनका साथ देंगें। लेकिन ऐसा नही हो सका और वह क्रांति सफल नही हो सकी। एक बिरहा में वीर कुंवर सिंह की यह व्यथा अभिव्यक्त हुई है कि, "मैनें डुमराँव महाराज से सहायता की आशा की थी, लेकिन वे तो खरगोश की तरह जंगल में भाग गए, इसलिए सब सोचा हुआ मिट्टी में मिल गया और हम स्वराज्य नहीं ले पाए।" लोकगाथाओं के हवाले से प्रो. श्रीधर मिश्र ने भोजपुरी लोकगीतों के विविध रूप में बताया है कि, "अकेले पड़ जाने के बावजूद अवध के इस राणा ने हार नही मानी 20 अप्रैल 1858 को डगलस की सेना से लड़ते हुए बुरी तरह घायल हो गए तो भी 23 अप्रैल को उन्होंने कप्तान ग्रैंड की सेना से युद्ध किया। ग्रैंड इस युद्ध में मारा गया लेकिन तीन दिन बाद वीर कुंवर सिंह का भी प्राणांत हो गया।"**(4)**

'वस्तुत: यह वह दौर था जब बकौल भारतेंदु हरिश्चंद्र, भारतीयों की समझ में आ गया था कि, "अँगरेज राज सब सुख साज सजे भारी / पै धन बिदेस चलि जात अति ख्वारी।"**(5)** लेकिन इस दुनीति का जैसा प्रतिरोध लोक साहित्य ने दर्ज कराया वैसा करने में तत्कालीन लिखित साहित्य पीछे रह गया। इस संदर्भ में लोक कंठ की पीड़ा और आक्रोश की यह अभिव्यक्ति द्रष्टव्य है- 'होई गहली कंगाल, हो विदेशी तोरे रजवा।" इतना ही नही, लोकगीतों में अँगरेज सरकार को राक्षस कहते हुए, किसानी को संघर्ष के लिए तैयार रहने के लिए पुकारते हुए, व्यवस्था परिवर्तन की माँग की गई जिससे तात्कालीन सामान्य जनता की स्वातंत्र्य चेतना का पता चलता है -

"अइसन रछछवा दुआरिया पर ठाक बोटें
तुरते होई जा तैयार रे किसनवाँ।
अदसन बेला जो आपन सरकार होति
परति न विपतिया के मार रे किसनवाँ।
भारत के लोग आज दाना बिनु तरसे भैया
लंदन के कुतवा उडावें मजा माल, हो बिदेसी तोरे रजवा में
हो गइली कंगाल हो, बिदेसी तोरे रजवा में। "**(6)**

इतिहासकार भले ही 1857 के स्वाधीनता संग्राम के कारणों को लेकर द्विविधा में हो, लोकसाहित्यकार को इस संबंध में कोई द्विविधा नहीं है कि विदेशी शासन की बर्बरता ही इस संग्राम का मूल कारण थी। लुटेरे, शोषक और जालिम फिरंगी शासन ने देश को इस प्रकार कंगाल बना डाला था कि किसान और आम जनता ही नही, राज परिवार तक रो रहे थे और मुल्क अपना मुल्क नहीं रह गया था। इन्हीं परिस्थितियों मे जनता को विद्रोह करने पर विवश किया..

"गलियन गलियन रैयत रोवै
हटियन बुनिया बजाज रे
महल में बैठी बेगम रोवे
दोहरी पर रोवे खवास रे
मोती महल की बैठक छुटी
छूटे है मीना बाजार रे
बाग बगनिया की सैरे छूटीं
छूटे मुलुक हमार रे। **(7)**

1857 के रणबांकुरे शहीदों संबोधित भारत माता की बेटियों के ये उद्‌गार को आज भी रोमांचित कर देने वाले है-

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO (CCCXCVIII) 399-A
ISSN : 2278-9308
March , 2023

"बीरन तेरी लाश पे बहना हो जाती कुर्बान
टीका, झुमका, कंगन, पहुँची, सब पर कर धिक्कार
घोड़े को एड लगाती और पहुंचती मेरठ के बाजार।"(8)

इसी प्रकार, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने 'लोक साहित्य की भूमिका (1957) में यह उल्लेख किया है कि, "जौनपुर जिले के कोइरीपुर गाँव के पास चांदा नामक एक गाँव है जहाँ सन 1857 में सिपाही विद्रोह के अवसर पर अंग्रेजी फौजों के साथ प्रतापगढ़ जिले के कालाकांकर स्थान के विसेनवंशी राजा ने घोर युद्ध किया था। अब भी इस गाँव आसपास इस युद्ध से संबंधित गीत गाए जाते हैं जिनकी एक कड़ी इस प्रकार है 'काले लोकर किसेनवा, चांदे गाडे बा निसनवा।"(9)

राष्ट्रीय चेतना को आधुनिक पश्चिमी शिक्षा की देन मानने वाले इतिहासकारों को लोक मानस में पैठी उस राष्ट्रीयता और देशप्रेम की भावना का अनुशीलन करना चाहिए जिससे अनुप्राणित होकर लोकगीत की एक ग्रामीण स्त्री केवल इस उद्देश्य के लिए माँ बनना चाहती है कि उसे स्वतंत्रता का पाठ पढ़कर देशभक्त बना सकती-

"एगो बालक होइते गोदिया में, खेलइती ननदी ।
स्वतंत्रता के पाठ पढइतीं, देश भगत बनइती।
विजयी विश्व तिरंगा देके, विजयी विश्व बनइतीं ।
एक दिन आपन सधिया, बबुआ से पुरवइती ननदी ।
सत्तावन के गदर पढ़इती, जालियाँ वाला बाग देखइती ।
वीयर भगत अस झुला, झुला के, अमर सहीद बनइतीं।
एक दिन बेटा वाली माता, कहाइती ननदी ।"(10)

स्वाधीनता आंदोलन में जब महात्मा गांधी ने सक्रिय भाग लेकर अपने आपको पूर्णत: झोक दिया था तब उनके जुझारू और संघर्षशील लोक को महात्मा गांधी के संत व्यक्तित्व में अपनी स्वतंत्र्य कामना की पूर्ति की संभावना दिखाई दी तो इसने अपने सपनों को गांधी के सपनों से जोड़ दिया और लोककंठ गा उठा-

'गांधी तेरो सुराज सपनवाँ हरि मोर पूरा करिहैं ना।
सोने की थारी में ज्यौना परोस्यों,
सबका जेवाई के जेइहें ना।"(11)

एक चैता में छाती पीट-पीट कर विलाप करती हुई भारतमाता अपनी मुक्ति के लिए महात्मा गांधी का आहवान करती है। साथ ही यह भी कहा गया है कि स्वाधीनता के यज्ञ में आहुति देने के लिए महात्मा गांधी, नेहरू और समस्त देशभक्त धूनी रमा कर योगी हो गए है-

"रामा भारत माता छाति बुनि-धुनि-रोवसु,
हो रामा सुन गांधी,
गांधी हामरो के कर तूँ अजदवा,
हो रामा सुन गांधी।"(12)

आपको मालूम होगा कि 1922 में राष्ट्रव्यापी अहिंसक आंदोलन का ब्रिटिश सरकार ने क्रूरतापूर्वक दमन किया था। इसी हिंसक नीति के तहत 1 फरवरी 1922 को चौरा थाने के उप-निरिक्षक गुप्तेश्वर सिंह ने पीट-पीटकर भगवान अहिर नामक आंदोलनकारी की चमड़ी उधेड़ डाली थी, जिसके विरोध में 4 फरवरी 1922 को अब किसानों ने जुलूस निकाला तो पुलिस ने उनपर लाठियाँ बरसाई। दोनों ओर से हिंसा भड़क उठी और उग्र भीड़ ने थाना जला दिया। गांधीजी ने इसकी निंदा करते हुए राष्ट्रव्यापी असहयोग आंदोलन वापस ले लिया और पांच दिन के उपवास पर

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO (CCCXCVIIII) 399-A
ISSN : 2278-9308
March , 2023

चले गये । लोकसाहित्य में इस घटना को ब्रिटिश सरकार के अत्याचार के खिलाफ स्वतंत्रता के दीवानों के लड़ाई के रूप में दर्ज किया है। स्वारणीय है कि, विद्रोह की रात चौरी-चौरा रेल्वे स्टेशन और डाकघर पर तिरंगा फहरा कर कुछ समय के लिए ही सही चौरी-चौरा को आझाद करा लिया गया था।(13) इस विद्रोह का जीवंत और मार्मिक वर्णन लोकगीत में इस प्रकार है-

"दिहले अगिया हो लगाय, जरि गइले गोरवा,
चौदह अँगरेज जरि तजेले परनवा,
भड़के लोग गाँव के सारे, दई थाने में आब लगाय
काट गिराया थानेदार को, गई खबर हिंद में छाय ।
मान लगाया कुछ लोगों ने, अग्नि कहीं भड़क ना जाय
खबर सूनी जब गांधी ने, दशहत गई बदन में छाय ।
हिंसा फैली कुछ भारत में, आंदोलन को दिया शमार्थ।

इस प्रकार के थे लोकगीत एक से अधिक हिंदी अंचलों से संबंध रखते है, लेकिन इनमें चित्रित लोकमानस का रूप एक जैसा ही है। अत: यह मानना स्वाभाविक लगता है कि स्वाधीनता आंदोलन की अनुगूंज संपूर्ण हिंदी क्षेत्र में एक समान थी। इसी अनुगूंज को लोक ने पूरी संवेदनशीलता के साथ व्यक्त किया है। महात्मा गांधी के आहवान पर 'करो या मरो' की टेर लगाते हुए अबाल वृद्ध नर-नारी भारत का समस्त लोक 'भारत छोड़ो' आंदोलन में कुद पड़ा। लोकसाहित्य ने इसकी मार्मिक अभिव्यंजना अनेक रूपों में सहेजी है। यह भारतीय इतिहास का ऐसा निर्भय काल था, जब भीषणतम अत्याचार सहकर भी भारतीय लोक महात्मा गांधी के पथ पर अडिग चलता रहा। उसके लिए यह गांधी का जमाना था । इतिहास में केवल 'नायको' के नाम दर्ज होते हैं लेकिन लोक-साहित्य 'लोक' के बलिदान की गाथा को सुरक्षित रखता है। गांधी के जमाने में सामान्य लोक की बलिगाथा लोक साहित्य में ही सुरक्षित है। यह भी उल्लेखनीय है कि स्वतंत्रता आंदोलन की प्राय: हर छोटी-बड़ी घटना ने लोक चित्त को उद्वेलित किया तथा महात्मा गांधी के प्रत्येक अभियान के विषय मैं घर -घर महिलाओं ने लोकगीत गाए और पुरुषों को सक्रिय भूमिका के लिए उत्प्रेरित किया। इतना ही नही लोकगीत में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन की अनुगूंज भी सुनाई देती है। वैचारिक भिन्नता के कारण भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की भले ही दो धाराएँ रही हो, लोक ने दोनों में ही अपनी मुक्ति का मार्ग तलाशा और दोनों को समर्थन दिया। जितना आदर लोक ने महात्मा गांधी के अहिंसा मार्ग का किया, उतना ही प्रेम सरदार भगत सिंह और नेताजी सुभाष चंद्र बोस के सशस्त्र क्रांति मार्ग को भी दिया।

स्वाधीनता के लिए किया जाने वाला संघर्ष अहिंसक तथा सशस्त्रक्रांति के आधार पर आगे बढ़ा। लोकसाहित्य में इन दोनों मार्गों के प्रति गहरा जुड़ाव दिखाई देता है। स्वाधीनता आंदोलन में तिलक, गांधी, भगत सिंह, सुभाष आदि के आहवान पर अपना जीवन होम देने के लिए जो लोग उठ खड़े हुए वे लोकजीवन से ही आए थे। उन अनाम लोगों के बलिदान को लोक़ ने लोक साहित्य में सुरक्षित रखा। लोकसाहित्य में रचनात्मक स्तर पर स्वाधीनता का इतिहास भी है तथा बलिदानियों के प्रति श्रद्धा का समर्पण भी ! स्वाधीनता आंदोलन राजनैतिक स्वाधीनता के साथ-साथ सामाजिक बुराइयों से मुक्ति का आंदोलन भी था। उसमें स्वाधीनता प्राप्ति और नए भारत के निर्माण का आग्रह था। लोकसाहित्य में इसकी अभिव्यक्ति हुई है।

संदर्भ:

1. लोकमानस - डॉ. विद्या बिंद्र सिंह
2. रणबाकुरों की गाथाएँ - लोककंठ से
3. द ओरल ट्रेडिशन - पंकज राग

4. भोजपुरी लोकगीत - श्रीधर मिश्र
5. भारत दुर्दशा - भारतेंदु हरिश्चंद्र
6. द ओरल ट्रेडिशन - पंकज राग
7. वही
8. लोकसाहित्य की भूमिका - डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
9. वही
10. लोकरंग - सुभाषचंद्र कुशवाहा -2014
11. वही
12. लोकसाहित्य की भूमिका - श्रीधर मिश्र
13. वही